RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 4 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 29 जून 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

महेश पांगती से बातचीज

दोनहरिया तक बीहड़ था और गौला तक की आवाज आती थी

महिमन सिंह जी ने 1938 में बंगला बनाया था ताकि जाड़ों के दिनों में हल्द्वानी भाबर आकर रुकें। यहाँ आठ बीघा जमीन थी

डीएफओ हीरा सिंह जी दीवानगी जंगलात विभाग में थी लेकिन पहाड़ से भाबर आने वालों को हर प्रकार से मददगार रहे

पचास के दशक में गरुड़ में था बड़ा कारोबार, हल्द्वानी समेत अन्य जगहों को ट्रक चलते थे

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी महानगर के रूप में फैलता जा रहा है लेकिन इसके शुरुआती दिनों में को देखें तो पता चलता है कि किस प्रकार हल्दू के पेड़ से इसका नाम हल्द्वानी पड़ा। (हल्द्वानी : स्मृतियों के झरोखे से पुस्तक में है इतिहास) इसी हल्द्वानी के भोटिया पड़ाव क्षेत्र में शौका समुदाय का सबसे पहला परिवार डीएफओ हीरा सिंह पांगती जी का आया था। वर्तमान की चकाचौंध में हर कोई पगडी पहने सड़कों पर नाच रहा है लेकिन शहर, आदमी और यात्राओं की वह सच्चाई उस दौर में झांकने से पता चलती है। असल में बीहड़ जंगल से घिरा हल्द्वानी भाबर क्षेत्र चारों ओर से आने वालों का केन्द्र बना। सीमान्त क्षेत्र के शौका समुदाय के बड़े व्यापारी महिमन सिंह पांगती ने एक बंगला बनाया था। ह्यून (जाड़ों) के दिनों में आने वाले जगह-जगह अपना ठहराव स्थल देखते थे, हल्द्वानी भी मुख्य पड़ाव बन चुका था। व्यापारी महिमन सिंह जी के सुपुत्र हुए हीरा सिंह पांगती जी। उस दौर के डीएफओ साहब का मायने ही विराट था। इनके सुपुत्र हुए- हमेन्त सिंह, महेश सिंह, भूपेन्द्र सिंह, गगन सिंह।

आज की बातचीत श्री महेश पांगती के साथ ही है। वह बताते हैं कि दादा महिमन सिंह के समय ही हल्द्वानी मं 1938 में मकान बन चुका था। जाड़ों में रहने के लिये इस स्थान को चुना गया। बंगले के अलावा आठ बीघा जमीन इसमें थी। दादा जी का सीमान्त में व्यापार था लेकिन उन्होंने गरुड़ में अपना कारोबार शुरू कर दिया। पचास के दशक में गरुड़ क्षेत्र में भी बड़ा कारोबार था। हल्द्वानी व अन्य जगहों के लिये उनके ट्रक आते थे। 1970 में स्वास्थ्य कारणों से उन्होंने गरुड़ का कारोबार समेट कर हल्द्वानी में रहना शुरु कर दिया।

महिमन सिंह जी के सुपुत्र हीरा सिंह जी एसडीओ नन्धौर, कोटद्वार तमाम जगह रहे। पिता के साथ जंगलों की खूब सैर महेश पांगती जी ने की है। सैलापानी, रामनगर, ढिकाला, गढ़वाल, लालढांग चारों ओर घूमने की यादों के साथ श्री महेश पांगती बताते हैं कि हल्द्वानी में हमारा बीस कमरों का बंगला

शेष पृष्ठ 2 पर

लोक कथाएं——— यू.आर.टम्टा

मरते समय पूंछ क्यों जमी

लोक में सैकड़ों लोककथाएं आदि काल से चली आ रही हैं। कुछ हाल की घटनाओं ने भी कथा का स्वरूप ग्रहण किया है। इन्हीं कुछ कथाओं को चुनकर श्रीमान उदय राम टम्टा ने संकलन किया। इस कॉलम में उन्हीं की प्रस्तुति है। -सम्पादक

पहाड़ों में अधिक ढलान वाली भूमि, जिसमें सीढ़ीनुमा खेत बनाना सम्भव नहीं होता, में भी खेती की जाती है। इससे केवल बरसाती फसल ली जा सकती है। रवि की फसल इसमें नहीं बोते क्योंकि बरसात का पानी इसमें बिल्कुल नहीं रुक पाता। हर साल नये-नये ढलानों की झाड़ियों को साफ करके उन्हें खेती योग्य बनाया जाता है, उसे कट्यूल कहते हैं।

बिरखोला गाँव के हयात ने एक बार एक बहुत बड़े कट्यूल की झाड़ियाँ साफ करनी शुरू की। उसका विचार इस साल मादिरा (मंजीरी) बोने का था। यह कट्यूल इससे पहले किसी ने आबाद नहीं किया था, इसलिये इसकी मिट्टी गहरे काले रंग की थी। इस साल वारिस अच्छी होने की आशा थी। उसने तीस चालीस कुथला (बोरा) अनाज कम से कम पैदा करने की आशा बाँधी थी। वह कुल्हाड़ी व दतूली (बड़ी दरांती) लेकर सुबह कट्यूल पर चला जाता तथा दिन भर छोटे-छोटे पेड़ व झाड़ियों को काट कर छोटे-बड़े केड़े (जलाने के लिये बनाया गया ढेर) बनाता। उसके काम में कट्यूल के पेड़ व झाड़ियाँ साफ हो गयी। केड़ों के सूखने का इन्तजार किया जाने लगा। जेठ का महीना शुरू हो गया और तेज धूप के कारण पत्तियाँ व टहनियाँ बिल्कुल सूख कर जलाने योग्य हो गई। पेड़ों के तने व मोटी टहनियाँ उसने छाँट कर अलग कर ली ताकि ईधन के काम आ सके और बारीक तने तथा पत्तियाँ केड़े में जलने के लिये डाल दीं।

आसमान में कभी-कभी बादल दिखाई देने लगे थे और किसी भी दिन वर्षा हो सकती थी, इसलिये बरसात से पहले केड़ों को जलाना आवश्यक था। इसके दो फायदे थे, एक तो इससे जंगली वनस्पतियों व खरपतवार केड़ों के बीच जल जाते थे दूसरे इससे खाद भी मिलती। जेठ की तपती धूप में वह कट्यूल जाने क लिये घर से निकला। सुबह शाम कट्यूल में आग नहीं लगाई जा सकती थी क्योंकि तब तेज हवा चलती है। तेज हवा से जंगल से आग फैलने का डर रहता है। अत: भरी दुपहरी में उसने कट्यूल पहुँच कर केड़ों में आग लगानी शुरू कर दी। कुछ ही समय में उसने सभी केड़ों में आग दी। वह केड़ों में लगाकर सीधे घर वापस आ सकता था परन्तु यह सोच कर कि कहीं आग जंगल में न फैल जाय, वह वहीं रुक गया। शीघ्र ही आग की लपटें आसमान को छूने लगीं। सूखी व अध-सूखी लकड़ियों के जलने से चटपट की आवाजें आने लगी। वह वहीं पर एक पेड़ की छाया में लेट गया।

जब सूरज ढलने तक वह घर नहीं लौटा तो उसकी पत्नी को उसकी चिन्ता होने लगी। चिन्ता का विषय भी था। केड़ों में आग लगाकर लौटने का काम तो कुछ मिनटों में ही पूरा हो जाता है। फिर केड़ों को जलाना कोई कम जोखिम का काम भी न हीं होता क्योंकि जरा सी भी असावधानी या हवा के यकायक विपरीत दिशा में चलने से आदमी के लपटों से घिर जाने की पूरी सम्भावना रहती है। इससे पहले भी इस गाँव में

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

डाक सेवक भर्ती पर सवाल

उत्तराखण्ड में डाक वितरण व्यवस्था पर जिस प्रकार का बखेड़ा पिछले कुछ समय से होने लगा है वह डाक सेवक भर्ती पर बड़ा सवाल है। दरअसल हरियाणा से इतनी बड़ी संख्या में किस प्रकार से भर्ती हो गई, और जो युवा यहाँ तैनात किये गये वह एकदम लापरवाही करते रहे हैं। चारों ओर से इस प्रकार की सूचनाएं प्रसारित हो रही हैं। ग्रामीण डाक सेवकों की भर्ती में युवकों के अलावा युवतियां भी हैं, जो अपने तेवरों के कारण बेहद चर्चा में हैं। हाल में एक प्रकरण में जब डाक सेवक युवती के घर छापा मारा गया तो बेहिसाब डाक पड़ी मिली। इसके अलावा डाक न बांटने पर ग्रामीणों को महिला होने का हवाला देते हुए फंसा देने की धमकी भी उसके द्वारा दी गई। यह सब क्या है? इससे पहले तीन डाक सेवकों द्वारा एक बालिका को भगाने का प्रयास किया गया। अन्य स्थान पर डाक वितरण में लापरवाही पर डाक सेवक धमकाने लगा। एक जगह पर पोस्टमास्टर द्वारा कहने के बावजूद डाक सेवक महिला की घोर लापरवाही दिखाई दी है।

ग्रामीण डाक सेवक भर्ती प्रक्रिया को लेकर अब पूरे प्रदेश में सवाल उठने लगे हैं। हिन्दी अंग्रेजी तक का सामान्य ज्ञान नहीं जानने वाले डाक सेवकों की भर्ती मेरिट के आधार पर होने वाले चयन पर आपत्ति जताई है। लोगों ने लिखित परीक्षा से ही चयन प्रक्रिया की मांग की है। सोशल मीडिया पर डाक विभाग में बीपीएम, एबीपीएम और ग्रामीण डाक सेवक पदों पर चयनित लोगों के ज्ञान पर आपत्ति जताते हुए लिखित परीक्षा को चयन प्रक्रिया का हिस्सा बनाने की मांग की है। केन्द्र सरकार की अधिकांश नौकरियों में लिखित परीक्षा के आधार पर चयन होता है लेकिन डाक विभाग की इन भर्तियों में केवल शैक्षिक मेरिट को आधार बनाया जा रहा है।

डाक व्यवस्था की व्यवहारिकता को देखते हुए स्थानीय स्तर पर युवकों को अवसर मिलना चाहिये। जो अपने क्षेत्र से परिचित ईमानदार युवा हों उन्हें डाक वितरण पर लगाया जाना चाहिये। डाक जैसे पवित्र कार्य में लापरवाही करने वाले चाहे प्रदेश के हों या दूसरे प्रदेश के उन्हें हटाया जाना चाहिये। ऐसा पहली बार हो रहा है कि डाक वितरण में घोर लापरवाही दिखाई दे रही हो। इस लापरवाही पर अंकुश लगाने के लिये आम जनता को सजग रहना होगा अन्यथा किसी पर कोई भरोसा नहीं होगा। वह व्यवस्था जिसके द्वारा एक लाल डिब्बे में डाले गये पत्र से दूर-दूर तक सूचना जाती रही है, उसे कुचलने वाले डाक सेवक नहीं हो सकते हैं। ऐसे तत्वों पर निगरानी हो।

फसक

दाज्यू, दूसरे को साधने में गू-गाज आ जाने वाला ठैरा

सार्टिफिकेट की फतोड़ा-फतोड़ करने में भी शान्ति मिलती है बल

दाज्यू, जब से सीएम धामी ज्यू ने खटीमा अपने खेत में पावर ट्रिलर चलाकर खेत की जुताई की और माँ बिशना देवी के साथ खेतों में गोबर की खाद डाली। तब हमने भी अपने गाँव वाले बंजर खेत में खुदाई शुरू कर दी है। दाज्यू, आधुनिक तकनीक के संग जैविक खेती का सन्देश असर करने लगा है लेकिन हमारा प्रधान फप्पू सिंह हमारी सुनने को तैयार नहीं है। कह रहा था- 'सबकुछ चुनाव चक्कर है।' दाज्यू, किसको क्या जो कहें? सब अपनी-अपनी कह रहे हैं। वैसे भी दूसरे को साधने में गू-गाज आ जाने वाला ठैरा।

वो कालेज वाला साहब बहुत परेशान है। कह रहा था- 'पूरा स्टाफ ट्रान्सफर कर डाला है। आफिस स्टाफ भी फुटबाल हो चुका है।' दाज्यू, इधर-उधर होने में भी तो गाज आने वाला हुआ। मदनलाल मास्साब का ट्रान्सफर नहीं हुआ है बल। कालेज में लात्कार का आरोप लगने के बाद उन्हें दूसरी जगह सटाया गया था और मामला शान्त होने के बाद बुला लिया गया। लतियाने के बाद नरम बतियाने का दस्तूर निभाया गया। ऐसे में मदनलाल की लार फिर से टपकने लगी है। सुना है मास्साब लोगों का लेवल बढ़ाने वाला काम भी चल रहा है। ऐसे में मदन दा को भी मौका मिल गया। दाज्यू, अपनी भले ही कितनी चरस लगाई हो दूसरे के सार्टिफिकेट की फतोड़ा-फतोड़ करने में शान्ति मिलती है बल। हमारी व्यवस्था का फोड़ा है ही इस प्रकार का कि चाहे भगन्दर ही हो खाने को पनीर टिक्का जरूर मिलेगा और लगाने को खुशबू वाली क्रीम।

दाज्यू, लेकब्रिज चुंगी पर टोलशुल्क को लेकर पर्यटक और पालिका कर्मियों के बीच विवाद हुआ। युवक ने तमंचा निकाल लिया बल। पुलिस पहुँची और दोनों पक्षों में आपसी समझौता हो गया। रामनगर में कोसी नदी के कालूसिद्ध खनन गेट पर अवैध खनन रोकने कि लिये विभाग की टीम ने दस डम्पर पकड़े लेकिन माफिया उनके कब्जे से सात डम्पर छुड़ा ले गये। वन विभाग कर्मचारियों को धमकाया भी गया। यहाँ डिप्टी रेंजर के हाथ में गम्भीर चोट लगी। बाद में वन विभाग ने छुड़ाकर ले जाए गए वाहनों का पंजीकरण निरस्त करने की तैयारी की।

रामगढ़ ब्लाक के पूर्व ब्लाक प्रमुख लाखन सिंह नेगी के खिलाफ भवाली कोतवाली में वन और लोक सम्पत्ति अधिनियम के तहत प्राथमिक दर्ज की गई है। बिना अनुमति सड़क कटान का आरोप लगा है। दाज्यू, जिला पंचायत चुनाव से ही लाखन दा का धुंआ निकला हुआ है। उनका कहना है- 'ग्रामीण सड़क नहीं होने से परेशान हैं। श्रमदान और अंशदान से सड़क बना रहे थे। प्राथमिकी दर्ज करना गाँव के विकास कार्य को रोकना है।' दाज्यू, कांग्रेस की ओर से 2027 के लिये भीमताल सीट इनकी तैयार है तो गू-गाज......। दाज्यू, जिधर देखो कपोरा-कपोर हो रही है। क्या कहें क्या न कहें। बाबा जी के दर्शन को आने वालों की कैंची के पास छल्लफोक हो रही है। जरूरी काम से घर जाने वाले, सरकारी काम पर जाने वाले, अस्पताल जाने वालों का जाम के मारे गाज निकल चुका है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

आरोपी की भूमिका पर सवाल उठाए

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सूचना के अधिकार अधिनियम यानी आरटीआई एक्टिविज्म (हर मुद्दे पर) नया व्यवसाय बन गया है। शीर्ष अदालत ने सड़क निर्माण कार्य से जुड़े सरकारी कर्मचारी के काम में बाधा डालने के आरोप में दर्ज मामले में आरोपी आरटीआई कार्यकर्ता को अग्रिम जमानत देने से इनकार करते हुए यह टिप्पणी की।

किशोरों के सोशल मीडिया पर रोक लगेगी

लन्दन। ब्रिटेन में सोशल मीडिया के किशोरों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को देखते हुए सरकार ने सख्ती की है। प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने घोषणा की कि 16 साल से कम उम्र के किशोरों को इसके इस्तेमाल की अनुमति नहीं होगी। अगले साल इस कानून को लागू किया जायेगा।

तेल-गैस सप्लाई में लगेंगे महीनों

न्यूयॉर्क। ऊर्जा विशेषज्ञों कहना है समझौते के बाद भी तेल और पेट्रोल की ऊँची कीमतों और ऊर्जा सप्लाई की समस्याओं का समाधान रातों-रात नहीं होगा। ऊर्जा कम्पनियों को दुनिया की मांग पूरी करने लायक कामकाज फिर से शुरू करने लायक कामकाज फिर से शुरू करने में महीनों लग सकते हैं।

हवाई प्रतिबन्ध एक महीने तक और बढ़ाया

लाहौर। पाकिस्तान ने भारतीय पंजीकृत विमानों के लिये अपने हवाई क्षेत्र में लगाये गये प्रतिबन्ध को एक और महीने के लिये बढ़ाकर 24 जुलाई तक कर दिया है। ये प्रतिबन्ध पहली बार अप्रैल 2025 में लगाए गए थे। जम्मू कश्मीर के पहलग्राम में 22 अप्रैल 2025 को आतंकवादी हमले के बाद उत्पन्न तनाव के कारण पाकिस्तान ने भारतीय विमानन कम्पनियों के लिये अपना हवाई क्षेत्र बन्द कर दिया था।

श्रीलंका पूर्व राष्ट्रपति का बेटा गिरफ्तार

कोलम्बो। श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति महिन्दा राजपक्षे के बेटे योशिता राजपक्षे को देश के भ्रष्टाचार रोधी आयोग ने भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार कर लिया है। योशिता रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के आरों की जाँच के लिये प्रस्तुत हुए थे।

दो नहरिया तक.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

था, जिसकी निचली मंजिल कमरे खाली थे और आने-जाने वालों का विश्रामस्थल भी। तब दोनहरिया तक बीहड़ था और गौला तक की आवाज आती थी। रात्रि में यह आवाज और भी भयंकर सुनाई देती थी। श्री पांगती बताते हैं की भोटिया पड़ाव में उनके परिवार के बाद धीरे-धीरे लोगों का आना शुरु हुआ। पहले शंकर मामा, मंगल मामा आए। उस दौर में किसी नेपाली कब्जेदार की बहुत चर्चा थी। बाद में उसे हटाया गया। दोनहरिया के अलावा अन्य जगहों पर भी जंगल होने से आबादी कम थी।

अपने बचपन के दिनों की यादों में खोते हुए श्री महेश पांगती बताते हैं पिता का ज्यादातर जंगलात सम्बन्धी दौरा होता रहता था, माता श्रीमती सरस्वती पांगती घर की व्यवस्थाओं को दुरुस्त रखती थीं। एमबी कालेज घर के बगल में होने से हम भाईयों की शिक्षा यहीं से हुई। कालेज में 'त्रिवेणी छात्रावास' के 5 कमरे थे, जिसमें बाहर से आकर छात्र रहते थे। मैदान में फुटबाल खेलते थे और फल-फूलों के पेड़ों की हरियाली थी। एमबीपीजी कालेज से ही बीएससी करने के बाद महेश जी ने जेएनयू में प्रवेश लिया। इस बीच बैंकिग सेवा में जुड़ गये। पंजाब नेशनल बैंक में लम्बी सेवा के बाद 2017 में जनरल मैनेजर पद से सेवानिवृत्त हुए। 5 साल तक महाप्रबन्धक रहे पांगती जी की सेवाएं मेरठ व दिल्ली में भी रही हैं। उत्तराखण्ड के महानगरों में गिने जा रहे हल्द्वानी की वर्तमान चकाचौंध से पहले इसकी बुनियाद को जानना हो तो पांगती जी के परिवार का चर्चा होना ही है। इनके परिवार में पत्नी श्रीमती ईला पांगती हैं। जबकि सुपुत्र मोहनीस और रजत अपने कार्यसफर में हैं।

फुटपाथ पर चलना मौलिक अधिकार

डीएम रयाल का एक्शन प्लान सकून भरा होगा

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड कार्मिक एकता मंच के संस्थापक अध्यक्ष एवं वरिष्ठ नागरिक जनकल्याण समिति की कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्य रमेश चन्द्र पाण्डे ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा फुटपाथ पर पैदल चलना मौलिक अधिकार सम्बन्धी दिए गए ऐतिहासिक निर्णय का स्वागत करते हुए इस निर्णय के क्रियान्वयन हेतु जनपद नैनीताल के डीएम ललित मोहन रयाल के स्तर से त्वरित पहल करते हुए बनाये गये एक्शन प्लान की सराहना की है। उन्होंने कहा कि इस मुहिम को सफल बनाने में प्रशासन को समूचे कार्मिक समुदाय एवं वरिष्ठ नागरिकों द्वारा पूर्ण सहयोग दिया जायेगा। श्री पाण्डे ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 19(1)डी और अनुच्छेद 21 के तहत पैदल चलने के अधिकार को जीवन के अधिकार से जोड़कर जो फैसला दिया है, वह देश के करोड़ों पैदल यात्रियों, वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं एवं दिव्यांगजनों के लिए संजीवनी समान है। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यदि सड़क है तो फुटपाथ बनाना और उसे सुव्यवस्थित रखना प्रशासन की संवैधानिक जिम्मेदारी है।

उन्होंने जिलाधिकारी नैनीताल ललित मोहन रयाल द्वारा जिले भर के फुटपाथों को अतिक्रमण मुक्त करने हेतु हर सप्ताह संयुक्त अभियान चलाने के निर्देशों की भी सराहना की। कहा कि यह पहल सुप्रीम कोर्ट के आदेश की भावना के अनुरूप है। अवैध पार्किंग पर रोक और अतिक्रमणकारियों को नोटिस देने का निर्णय स्वागतयोग्य है। कहा कि कुमाऊं के प्रवेश द्वार हल्द्वानी में फुटपाथों की दयनीय स्थिति के कारण आम जनता का चलना फिरना दूभर हो गया है और फुटपाथ पर अतिक्रमण के चलते आये दिन होने वाली दुर्घटनाओं में जान से हाथ धोना सामान्य बात होकर रह गई है। उन्होंने कहा कि ऐसी गम्भीर एवं सम्वेदनशील स्थिति को देखते हुए फुटपाथ बचाने के लिए विभिन्न स्तरों से आवाज उठाई जाती रही है लेकिन प्रशासनिक उपेक्षा के चलते जहाँ एक ओर अतिक्रमणकारियों के हौसले बुलन्द रहे वहीं फुटपाथ बचाने के लिए आवाज उठाने वालों में मायूसी रही। सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय से जहाँ एक ओर चौतरफा खुशी है वहीं दूसरी ओर इसे अमलीजामा पहनाने के लिए डीएम का एक्शन प्लान जनमानस के लिये सकून भरा होगा

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जोहारि बोलि-भाषा अभेगि (अभागी) मारमिक काथ

जगदीश सिंह बृजवाल

''अभेगि कौतिक गे, कौतिके नी भे'' जनजैलि भाग, बौट् नी पांयु, ज्वल जीवन भरि सुख पौन नेछ, कू जूनीक पाप भुगतनी हौंल, मैस ले कनन- ''कौकै भाग मा चितरगुपतल-दुखे-दुख लेखियूं छी की?''

जनम ले 'गुलाम भारत बन' अजाद हेबर ले की हँछि, पर आबन करमठ, कर्तव्य, बरिया बलौन-चलौन, ब्यौहार, जीवनक संघर्ष,जीनक लीजे हौंसल छीये. ... बस, ''भगवान थे 'अभेगिक' सुख दिखन मंजूर नी हने'' जोक जीवनक अलगे कहानि, रचि-बसि दी।

गरीब आ्म-बबाक नानतिनल् गरीबे हनछ्। जमानले खराब अन-पानि, खानी-लेनी भौत अपेट, मैसनक रात्ते-ब्याल ढार भरने दे मुसकिल छी। फिरी घऽरमा चार नानतिनक, कष्टे -कष्ट, रात्ते-ब्यालक जुगार ले हंछी, उतीके भोत छी।

समय सरकने रे, च्येलि-च्याल मनी ठुल-ठल हन बसि, तब ज्योठ प्यूठ नानतिन आ्म-बबाक हात-सार कन बसिगे, घर वलानथे थ्वार राहत दे मिलि, आ्ब पुरे परिवारक मनी-मनी सबनल के भले लागनीछी।

दाद-बुबन, जमान कस छी पत नै, पर जू जमान 'अभेगिल' दिखि तब गौ, इलाक बन बैकि-बैकि परिवार गरीबी अभाव, मां छी। शौकनक परिवार, बिरादरन ज्वार नङर कनमा बितौछी, तलि मुनस्यारी, नङर रनीक जीमदारन, अलाव द्वी-चार परिवार गोंबन सौकान जू कैं नी सरकंछी.., गौंक समाज, मैस आपस मा बलौन-चलौन के उदी भेद-भाव, नी कंछि, आपसी भाव छी, ऐक दुसरक इजत कंची, सैठ गरीब सब ऐक जब म मेल-मिलाप, रिस्तक भौत कदर कन जानछीं।

अभेगि जब ऐफि थे 'भेगि' समजझि, किलेकि-'ठूल दाद-आत आ्म-बबाक सबनक लारूलि सबसे नौन चेलि', उ जीवनक थ्वरे लिंक लिजे में.....

समय खिसकने गे, एक छाग ,बबाल आ्म थे के- आब हामर सबसे ठूल च्येलि बिवोन हेग, छ्योर चेन-च्यून करा, बार पुर हेबर तेलों लेगिगे। च्योलल के होय अमा-'ठीके भे, अब छ्योर ले व आबने बाररबुरि चौंछ्, जसे ऐफि ,वसे भेट लागन, 'अभेगि कौतिक गे कौतिके नी भे' वां ले दूखे भगतन छी।

ज्वारक सौकनक आबन, पितरक पालबी घुमन-फिरनक जीवन -ह्यून चौमासे,मौसमक हिसाबल, घुमफिरी, ब्यौपार-तिब्बत, कुमाऊं, गढ़वाल, बेगसर, थल, जौलजीबि म्याल, सारि पहार, तलि ब देस तक पुजि जांछि, यांक सौकनक अलगे रित रीवाज, खान-पिन, लेंन सपे चीज अलगे ढबक छी, जोक चलयूं छी बरिया उनरत गजबे भे, जोक के नी में खान परापत, जू गरीब सौकान, यक्के जा्ग जिमदार, बामन, स्वर ले जा्त छी।

सौकानक ज्वार-मुनस्यार तलि-मलि जानिक मो घ्वार-खेंचरनक खनखनाट-घननाट, भेर-बकराक लमलेत दिखि मनी मन दुखी हनेछी, .. कि कबे हामर ले. ..? पितर, हरपाल पाल..!

आब जब क उमर हन बसि, तब आमाल बा्ब थे के- आ्ब ठूल नानक बरियात कन ले जरूरी छ्, बबाल के- 'चौन चितौन कनु पे हे जौल।'

जब चौन मा जै के नी भ तो मऽनल सोचिबेर की हंछ्? ... 'दुखत परिवारमा लुत जस लाग्यूंछी।' भल कसके हौल... बा्ब ले सोचि- सोचि....थ्वार दिनक बाद बिमार परिगे। बस, आज भल होल, भौंल होल केबर, मैंन बीतगे, भले नी भे। तब अमाल येक दिन के - जा बाऽ !'लङगार बी बामन बेद भटिये लो च्यला', त्यर बाबथे भल हनदे न दिखनु, ठूल रात्ते उठीत च्योल न्हैग, 'बेदक घर भटिऔन तक बबाल पराने छारि दी' अदमर बौट बी बेद ज्यू ले वापिस न्हैग, अब आमाक सहौर, बालकुल परिवार खेति-बेरि, ऊन-चान, बऽन-बौट केबर दिन काटने छी।

आ्ब अमाल ठूल च्योलक बरियात कनिक सोंचि पर वस ढबक कैं नी मिलन बसि, तब यक्के उपाय सटां-सट गरमा छोरि छिये, तब वह ढबक परिवार मिलि पर दोहर ब्या वा्ल घर ठीक-ठाक तलि मलि गैजिर बकार वा्ल, अमाल सोचि- 'चेलिक भल हौले, च्योल खै जौ्ल' द्विये परिवार रैजि हेग। पर चौलिक बरियाआत घमचम न्हे सकीन। चेलिथे सोच परि, फिरि घरवालनक कंयूं कू टालि सकन।

में बरियात, अभेगिक, अभाग चलने रे। बस, थ्वार दिनक बाद घरवालन बटे-बुटि आवन पैल लगे दि हल, मनमा बरिया -बरिया सोच छी। 'भेगि में अभेगि, अभेगिक खुलि भाग' मनमा सोचि।

सौरास सब ठीक ठीक-ठाक, छल-बल भलै, सौस-सौर भले, आबन काम करने रि। तबे एक स्यैनि नोन शोध दे- ऐ पूयूं, तेर बेग दकार बौलायने तेल, 'म्हे भोत सरम टारे बी आबन घरवलाक मुख पल्ली भारत दिखि, कयी दिन तक झूंप घालिबेरे हिटने रे, धो आज नंदल झूप वकाल के दी थी।

'पेल' (ससुराल) मा सपेतीर ठीक छी। के दुख ने। खान-लेंन, भले दिन बीतनी मऽनल सोचि, आबदे भाग खुलीपे। म्यर मैतनक भाग कब खुलछं.... आज मन भौत खुस्सी दे हेरेछी।

फिरि....'अभेगि कौतिक गे कौतिके नी भे' थ्वार जीवन भले चलन चिते, तबे ऐजि कानल वसे फसक सुनीन बसि। कि त्यर घर वा्ल माल भावर बकार दकार जायू छी। वां बी घऽर ऐक आदिम ऐ रेछी। सोसुल के- 'कब आये लछमू, वल के- कैंखि! बेलि छाक ऐ, 'मैं तमरे वां औनि छी। बाऽ, बकारवालनक की खबर पात छ् पे लछूम! 'कैंखि सबे भले छ्, बस, थ्वारे, तमर वां 'दाद'.. थे जऽर-बुखार दे ऐ रछी, भल हे जौल।' कैंखि- ओ इजा कसरत भल नी एं, ईश्वर अ मनी चौने रया।

वरि भितरबी 'ब्वेरिल' कान लगेबेर मेल सुनीयूं छी, च्यांव ढबक हेग..'अभेगि कस त्यर भाग। छू... हे, ईश्वरअ् ने, तीमी बिचार कया... 'जूं भाग मा छी, ईश्वर थे कां मंजूर, हनि कां टलंछी। खबर पात घऽरबी, सासुल कने रे, भलके दर दवाई कराया। आज भल, भोल भलहौल पर 'घरवाल' भले नी भे......उ दिन ले ऐग जब घरवाल दुन्नी छारि न्हैगे। . भलके ले मुख दिखीयूं नी छी, तेर-चौदह उमर मा रनस्येनि बनिग्यूं, 'आंसुक धार बगि.., दिलमा चौट लेगि। फिर कैबे ले बरियात नी कनाक मऽनल कसम खै।

आंखिर 'सौरास' मा कौक् सहौरल बसछिं, के समझ मा नी औनी, होते-करते द्वि, तीन मैन गुजरि गे, ऐजिले सपन दकार भलके घुलि-मिल नी छी। क्वे हे! रौम शिबु-शिबु! तो क्वे कसै बलौनिक वलान ले कम नहीं छी... .. पर ससुराल परिवार को सबे भले कछी। आ्ब येक दिन मैत बी दहौति ऐ, थ्वार दिनक लिजै छ्योरि दे मैत भेज दिया। मैं आब मातरि-बाबूक घरमा पुजि, डराडर भे। फिरि कबे वापिस नी गे। जू सोचिछी वसे। थ्वार भोत, ऊन-चान कन सिखि, आ्ब जीवन चलने रे।

''कुछ मऽन मा, 'अभेगि' औन् की हि यतौर जीवन कसके काटील। कसके दुन्नी मा रयील। इजत भरमल रन? मैं कुछ आबन हुनर सीखन परूल?''

'जमान' कठिन छी, गों- घऽलर बनक मैसान बन-बौट, घास-पात, ग्वर-बाछ ढुङ-लकौर, ऊन-चान, के-क्वी दीन काटछी। जौलजिबि, बेगसर, थलक म्याल मा सौकान पाख-पिछौर, दन्न, आसन ऐजले बेचीने छी, ब्यपैरि बेगसर जांछी। बस.... अभेगि थे, येक उपाय मन मा ऐ, कि दिऽन काटन छ, 'इज्जतल' तब काऽम अनंत. जीवन काटीनक जुगत हौल, वसे ले भे...'रौग-सौकल मनदर कभे नी छारि।'

आ्ब हामर 'देसल' थ्वार उन्नति ले कैछी, बिकासक गैरि चलन बसि- 'खेति-पैति, लैंन-खान मनी इफरात भे, सरकारल ले काम करा के गरीबन थे अनुदान-सनुदान दिऽन बसि, सपनक थे बुरियां काल मा पिनसील लगेदी, बिंधवा, ढुन-का्न, सबथे मिलन बसि। आ्ब खा्न-लैनाक उदीक दिक्कत नहीं रे, बस!' छी अभेगि परान योकले... योकले।

जब 'जमान' भल ऐ, पैलि भे लाख गुना भल, पर अभेगिक मनत असान्ते भे, उमर ले हेगेछी, जु जीवन 'अभेगिल' बीते लेखकल आबन कलमल मार्मिक ढङल लेखि, सङघर्ष दिखियूं छी। तब कन्हू- भगवन !'कौके जीवन मां यह ले हन! जीवनल जीन नी दी, ज्वल हार नी मानि, जीवनथे बते की- 'त्यर कसटल मेल आबन जीवन अदमर बन नी छारू,. .. ते के कर !. आंखिर मा मौत उमर खैबर ऐ, तबे टुटि ,जब सोचि की अब हाथ खुट रेगे, महै आ्ब चलदिन चाये। पत नी चलि कब गे केबर, कौके रै-द्वै नी रैखि....रातघरि सबनक खापन ये...रौम शिबु-शिब! भले छी...'अभेगि कौतिक गे कौतिके नी भे।' जिनदगी सपन दकार वस धन कदिये?

ज्योतिष की बातें

29 जून 2026 को बुध कर्क राशि में वक्री हो जाएगा। अब बुध से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल अगले 25 दिन तक प्रबल रूप से प्राप्त होंगे।

2 जुलाई 2026 को (स्थानभेद से) बुध कर्क राशि में पश्चिम दिशा में अस्त हो जाएगा अत: बुध से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल अगले 20 दिनों तक अल्पमात्र में ही प्राप्त होंगे।

4 जुलाई 2026 को शुक्र शत्रुराशि सिंह में प्रवेश करेगा जहाँ पर पापग्रह केतु से युति भी होगी। अत: शुक्र अत्यन्त निर्बल रहेगा। इसलिए शुक्र सांसारिक सुख, प्रेम प्रकरण, दाम्पत्य जीवन आदि अपने कारक विषयों में 28 दिनों तक प्राय: सभी राशि के जातकों को शुभफल प्रदान नहीं करेगा अपितु मीन, कुम्भ व वृश्चिक राशि के जातकों को शुक्र से सम्बन्धित विषयों में सावधानी रखनी चाहिए।

यहाँ पर सभी ग्रहों के अलग-अलग गोचर पर प्रस्तुत किए जाते हैं। व्यक्ति विशेष को सूक्ष्म फलादेश के लिए सभी ग्रहों के गोचरफलों में सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार

रोग का एक विशेष कारण

आजकल कुछ लोगों में हर प्रकार की हवस देखने को मिलती है। पानी, बिजली, खाना, कपड़े आदि हर प्रकार की उनके अन्दर हवस होती है। पानी आएगा तो बड़ी से बड़ी मोटर लगाकर सारे मोहल्ले का पानी खुद भर लेना चाहते हैं। दूसरों को पानी मिले चाहे न मिले। पंखा खोलेंगे तो फुल स्पीड पर, उनका बस चले तो उससे भी अधिक तेज कर दें। एसी चालू करेंगे तो अधिकतम ठण्डा, भले ही बीमार क्यों न पड़ जाएं। कहीं खाने जाते हैं तो इतना भर लेते हैं प्लेट में, जैसे कि कई दिनों के भूखे हों। किसी भी चीज को छोड़ते नहीं हैं। कपड़े भी, जैसे ही कोई नई डिजाइन दिखाई पड़ती है तुरन्त खरीदते हैं। इतने सारे कपड़े खरीदते हैं कि कुछ का तो जीवन में कभी पहनने का अवसर ही नहीं आ पाता। कोई नई पिक्चर आए तो सबसे पहला शो देखना चाहते हैं। किसी भी पिक्चर को छोड़ते नहीं हैं। गाड़ी भी चलाते हैं तो एकदम फुल स्पीड पर, फिर ब्रेक भी तेज लगाते हैं। जब बोलने का अवसर आता है तो इतना बोलते हैं कि दूसरे को बोलने का मौका ही नहीं मिलता। दूसरे की बात सुनते तो हैं ही नहीं।

इस प्रकार के सभी या कुछ स्वभाव रखने वाले लोगों को प्राय: बीपी की शिकायत पाई जाती है। बीपी की चिकित्सा करते-करते हृदयरोग, डायबिटीज आदि स्थाई रोग भी पैदा हो जाते हैं। व्यक्ति का इस प्रकार का हवस का स्वभाव ही उसकी समस्त बीमारियों की जड़ होता है। जिसे कहीं चैन नहीं, वह कभी स्वस्थ भी नहीं रह सकता। इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि 'सन्तोषं परमं सुखम्' और भी 'जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान'।

उपरोक्त बातें शास्त्रोक्त नहीं है बल्कि मैंने अपने मन से लिखी हैं इसलिए इनको सदैव सत्य मानना आवश्यक नहीं है ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

35 साल बाद हिमालयन कार रैली

देहरादून। उत्तराखण्ड में 35 साल बाद अन्तर्राष्ट्रीय हिमालयन कार रैली का आयोजन होने जा रहा है। इस आयोजन से एडवेंचर स्पोर्ट्स के क्षेत्र में प्रदेश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान मिलेगी। कैबिनेट ने इस आयोजन के लिए संस्था का चयन एकल स्रोत से किए जाने को मंजूरी दी।

उच्च हिमालयी क्षेत्रों में बर्फीले इलाकों, ऊँचे दर्रों, सर्पीली पहाड़ी सड़कों पर पर्यटक रोमांच का अनुभव करेंगे। इसकी जिम्मेदारी टीम फायर फॉक्स को सौंपी गई है। कैबिनेट ने एकल स्रोत से इस कम्पनी को जिम्मेदारी देने की मंजूरी दी गई। सचिव पर्यटन धीराज गर्ब्याल ने बताया कि रैली एडवेंचर प्रेमियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनेगी। हिमालयन कार रैली में 125 से अधिक लोग हिस्सा लेंगे। बताते चलें कि उत्तराखण्ड में 1980 से 1990 के बीच इस रैली के 11 आयोजन हुए। इन आयोजनों से भारत को वैश्विक मोटर स्पोर्ट्स के नक्शे में पहचान मिली थी।

डीडीहाट में तीन दिवसीय राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी सम्पन्न

डीडीहाट। अल्मोड़ा से प्रकाशित बच्चों की पत्रिका बालप्रहरी/बाल साहित्य संस्थान तथा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट के संयुक्त तत्वावधान में डायट पिथौरागढ़ में तीन दिवसीय राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी में बालसाहित्य और बच्चे, बालसाहित्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण, बालसाहित्य और सोशल मीडिया, उत्तराखण्ड का बालसाहित्य विषय पर आयोजित अलग-अलग सत्रों में बालसाहित्य के विभिन्न पक्षों पर चर्चा हुई।

बालसाहित्य शोध संस्थान दरभंगा के निदेशक डॉ. सतीश चन्द्र भगत, बालसाहित्य संस्थान हरियाणा की निदेशक डॉ.शी कौशिक, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अजमेर, राजस्थान के वरिष्ठ प्रवक्ता एवं बालसाहित्य कार डॉ. चेतना उपाध्याय, बाल वाटिका पत्रिका की सह सम्पादक डॉ. इन्दु गुप्ता, भारत ज्ञान विज्ञान समिति झारखण्ड के हेमन्त जायसवाल, उत्तराखण्ड भाषा संस्थान के सदस्य डॉ. हयात सिंह रावत, डायट बागेश्वर के प्राचार्य चक्षुष्पति अवस्थी, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अल्मोड़ा के पूर्व प्राचार्य गोपालसिंह गैड़ा, बच्चों की बगिया पत्रिका के सम्पादक लखन प्रतापगढ़ी सहित तमाम लोग मौजूद थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सड़क निर्माण रुकने पर ग्रामीण भड़के

भीमताल। रामगढ़ की ग्रामसभा लोशज्ञानी में सड़क निर्माण को लेकर ग्रामीण बेहद नाराज हैं। आरोप है कि वे वर्षों से सड़क सुविधा से वंचित हैं और अपने श्रमदान एवं अशंदान से सड़क निर्माण का कार्य कर रहे थे, जिसे विभागीय कार्यवाही के तहत रोका गया। कहा सरकार इसमें ठोस पहल नहीं करती है तो आन्दोलन होगा।

कालू सैय्यद बाबा की मजार पर उर्स

लोहाघाट। नगर के हथरंगिया स्थित हजदत कालू सैय्यद बाबा की मजार पर तीन दिवसीय उर्स का कुल शरीफ के साथ समापन हुआ। हिन्दू-मुस्लिम एकता की मिसाल इस आयोजन में पूरनपुर, पीलीभीत से आये कब्बालों ने कलाम पेश किए। उर्स में स्थानीय व जौलजीवी, पिथौरागढ़, धारचूला, खटीमा, टनकपुर, पीलीभीत आदि जगहों से जायरीन पहुंचे।

पटवाडांगर में एसटीपी निर्माण

नैनीताल। सीवर निस्तारण की समस्या के स्थायी समाधान की दिशा में कार्य में तेजी है। भूमि हस्तान्तरण और राजस्व विभाग की ओर से सीमांकन के बाद अब प्लांट के डिजायन का कार्य शुरू हो चुका है। असल में नैनीताल शहर के सीवर के वैज्ञानिक निस्तारण के लये उत्तराखण्ड अर्बन सेक्टर डेवलपमेंट एजेंसी की ओर से 96.15 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजना संचालित की जा रही है। इसी के तहत नई सीवर लाइन बिछाने के साथ आधुनिक सीवर ट्रीटमेंट व्यवस्था विकसित की जानी है।

कर्णप्रयाग की घटना को लेकर तराई में राजनीति गलत पर कार्रवाई हो

बाजपुर/काशीपुर। यात्रा सीजन के दौरान कर्णप्रयाग में सिख युवकों द्वारा तलवार लेकर किये गये प्रदर्शन के बाद सोशल मीडिया में जिस प्रकार से वीडियो वायरल हुए उसने चर्चा फैलाई और दो पक्ष बनकर आरोप लगाने लगे। इस बीच मामूली विवाद को लेकर तराई में राजनीी का पाठ भी पढ़ाया जाने लगा जबकि सीधी सी बात है गलत पर कार्रवाई हो। राह चलने के दौरान सिख युवकों के साथ हुए विवाद में कौन दोषी है उस मामले पर सुलझाना छोड़, बयानबाजी करने वालों ने प्रदेश में माहौल को उकसाया है। साथ ही इस प्रकार की घटनाओं से प्रदेश के बाहर भी तर्क-कुतर्क सुनाई देने लगे हैं।

उत्तराखण्ड में पर्यटन को बढ़ावा देने की बात करने वालों और यहाँ की सरकार को ठोस कदम उठाने होंगे ताकि जाम से परेशान और मर्यादाओं का उल्लंघन करने वालों से दुखी पहाड़ सुरक्षित रह सके। इसके लिये ठोस कदम उठाये जाने जरूरी हैं।

परिक्रमा

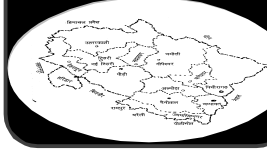

फचैऽक

खोइ वाव कतुक तिपुर बाखइ, उधरण टूटण लाग रई भला भाल लम पटाड.णन में, सिनाक घांज जामि गई सिनाक घांज जामि गई, रड़न लाग रै पाखैकि दन्वार लमि बाखइक भराण पल्जू, ध्यूडलि करि हाली खुक्यार चाड़ मुस भाजि गई वां बै, चोल लगूण में डरैं गौत्याइ भूताक घर जास है गई, खोई वाव तिपुर कतुक बाखइ।

गणेश पाण्डेय

रं समाज के ग्रामीणों ने नाभीढांग में मूर्ति स्थापना करने पर विरोध जताया

धारचूला। आदि कैलास ग्रुप 20-20 ट्रस्ट की ओर से नाभीढांग में शिवलिंग और नन्दी महाराज की मूर्ति स्थापना का रं समाज के लोगों ने विरोध किया और कहा कि यह रंग समाज की परम्परा के खिलाफ है। इसके बाद मूर्ति ले जा रहा ट्रक पांगला से धारचूला लौट आया। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि स्थानीय पुजारियों की अनुमति के बिना यह कार्य होने जा रहा था।

बताते चलें कि नाभीढांग की भूमि ग्राम पंचायत गर्ब्यांग में आती है। ट्रस्ट के संस्थापक भरत जोशी के धारचूला पहुंचने पर ग्रामीणों ने उनसे भेंट की और मूर्ति स्थापना का विरोध जताया। भरत जोशी ने ग्रामीणों से अनुमति लेने की जानकारी नहीं होने की बात कही। ग्रामीणों ने स्थानीय पुजारियों की अनुमति के बिना यह कार्य नहीं करने की बात रख। इसके बाद उच्चहिमालय क्षेत्र में मूर्ति ले जा रहा ट्रक लौट गया।

बागेश्वर में रेल लाइन की मांग तेज

बागेश्वर। टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन निर्माण की मांग को लेकर टनकपुर बागेश्वर रेल संघर्ष समिति ने तहसील परिसर में धरना-प्रदर्शन किया। आरोप लगाया कि पिछले 22 वर्षों से रेल परियोजना को लेकर आश्वासन दिया जा रहा है जबकि धरातल पर कोई ठोस पहल नहीं है।

रेल लाइन की मांग को लेकर समिति की अध्यक्ष नीमा दफौटी के नेतृत्व में आयोजित धरना प्रर्शदन के दौरान वक्ताओं ने कहा कि वर्ष 2004 से रेल लाइन निर्माण की मांग को लेकर लगातार आन्दोलन चल रहा है लेकिन आज तक परियोजना पर प्रभावी कार्य शुरू नहीं हो सका। बैठक का संचालन उपसचिव चरण सिंह बघरी ने किया। वक्ताओं ने कहा कि पिछले दो दशकों में कई बार रेल लाइन का सर्वे कराया गया लेकिन मामला फाइलों तक ही सीमित रहा जबकि क्षेत्र के विकास और पालयन रोकने के लिये रेल सम्पर्क अत्यन्त आवश्यक है। सरकारें इस गम्भीर मसले पर उदासीन रही हैं। धरने में केशवावन्द जोशी, प्रताप सिंह दानू, गोकुल जोशी, महेन्द्र सिंह, मालती पाण्डे, पार्वती पाण्डे, हरीश सोनी सहित कई लोग उपस्थित थे।

एयरपोर्ट विस्तारीकरण को कब्जे हटें

रुद्रपुर। डीएम नितिन भदौरिया ने पन्तनगर एयरपोर्ट विस्तारीकरण की जद में आ रहे अतिक्रमण को चिन्हित करते हुए नोटिस देकर ध्वस्तीकरण करने के निर्देश दिये। उन्होंने एयरपोर्ट व एनएचएआई को विस्तारीकरण कार्य एवं स्वीकृति में तेजी लाने के भी निर्देश दिये।

जिला सभागार में पन्तनगर एयरपोर्ट के एरोड्रम समिति की बैठक के दौरान निदेशक विमानपत्तन भाविप्रा पन्तनगर एयरपोर्ट पवन कुमार ने बताया कि एयरपोर्ट के आसपास सुरक्षा के दृष्टिगत बड़े पेड़ों की कटाई-छाटाई, झाड़ियों की सफाई की आवश्यकता है। जिस पर डीएम ने पन्तनगर एयरपोर्ट व वन विभाग के अधि कारियों को निर्देश दिये कि टीम लगाकर पेड़ों को चिन्हित करते हुए पेड़ों व झाड़ियों की कटाई-छटाई करें।

एयरपोर्ट निदेशक ने एयरपोर्ट की सुरक्षा व एयरपोर्ट पर यात्रियों और परिचालन की गतिविधियों में वृद्धि देखते हुए पर्याप्त सुरक्षा कर्मियों की तैनाती व हवाई क्षेत्र में गश्त के लिये पेट्रोलिंग वाहन उपलब्ध कराने को कहा।

कैंची धाम के जाम से दुःखी हैं लोग

अल्मोड़ा/नैनीताल। भवाली-अल्मोड़ा हाईवे पर कैंची धाम के पास होने वाले जाम से आम जनता दुःखी हो चुकी है। कहने को ग्रीष्म के सीजन और धार्मिक आस्था के सैलाब से भीड़ जुट रही है लेकिन देखने में आया है कि इधर उधर से आ रही भीड़ में पिकनिक मनाने वाले जिद्दी लोग ज्यादा हैं। बार बार कहने के बावजूद सड़क पर भीड़ लगाना, वाहनों को आड़ा-तिरसा खड़ा करना जैसे कार्यों से राहगीरों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। पर्वतीय रूट पर चलने वाले वाहनों को रेंगकर जाना पड़ रहा है। आठ-दस घण्टों की अतिरिक्त बर्बादी के कारण यात्रीगण ध्वस्त होती व्यवस्था और आस्था के नाम पर चल रहे कारोबार को कोसने लगे हैं। इतना जरूर है पूरे प्रदेश में आस्था के इस प्रकार के कार्यों से कुछ ही लोगों को कारोबार का लाभ हो रहा है, शेष पूरी भीड़ घनचक्कर बनी हुई है।

गंगोलीहाट-बेरीनाग सीट पर भीमकुमार का दबदबा अचंभे की बात नहीं है

सीट पर हलचल तेज

2027 विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आने को हैं उत्तराखण्ड की राजनीतिक हलचल दिन पर दिन करवट बदल रही है। इसी क्रम में गंगोलीहाट बेरीनाग सीट पर टिकट को लेकर घटनाक्रम सपाट होते दिखाई दे रहा है। कांग्रेस की ओर से जहाँ खजान गुड्डू का दबदबा दिखाई दे रहा है वहीं भाजपा की ओर से टिकट की लाइन लम्बी है परन्तु डॉ. भीम कुमार की साधना लग रहा है इस बार उन्हें मौका देने जा रही है। अपनी तरुण अवस्था से ही ही सामाजिक कार्यों के अलावा राजनीतिक गलियारों में पकड़ रखने वाले भीम कुमार अपनी बात-व्यवहार से भाजपा-कांग्रेस दोनों पक्षों के प्रिय रहे हैं। जमीनी पकड़ रखने वाले इस नेता ने स्थानीय राजनीति के साथ ही पार्टी के बड़े नेताओं के साथ पकड़ दुरुस्त रखी है। जिला पंचायत सदस्य रहने के अलावा विधायक के टिकट की इनकी पुरानी आस है। परिपक्व राजनेता डॉ.भीम कुमार ने हाल में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में जिस प्रकार से सफलता पाई है वह उनके खाते में धनात्मक है क्योंकि उनकी नई नवेली बहू बेरीनाग ब्लाक प्रमुख बनने में सफल रही। माना जा रहा है कि भाजपा जिस प्रकार से जिताऊ प्रत्याशियों की खोज में है उसमें भीम कुमार को मैदान में उतारा जा सकता है।

नयना देवी मन्दिर स्थापना दिवस

नैनीताल। माँ नयना देवी मन्दिर का स्थाापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मानसखण्ड मन्दिर माला मिशन के अन्तर्गत मन्दिर परिसर में बनाए गए नयना देवी मन्दिर के नवनिर्मित प्रवेश द्वार की पूजा-अर्चना के बाद उसे भी खोल दिया गया। कलश यात्रा से शुरू आयोजन में विधि-विधान से पूजन के अलावा भजन संध्या हुई। अमर उदय ट्रस्ट के अध्यक्ष राजीवलोचन साह, घनश्याम साह, प्रवीण साह, संजय साह सहित तमाम लोग उपस्थित थे।

मेरठ-ऋषिकेश के बीच नमो भारत ट्रेन

देहरादून। मेरठ के मोदीपुरम से ऋषिकेश के पास लक्ष्मणझूला तक हाई स्पीड नमो भारत ट्रेन (आरआरटीएस) का सपना सच होने जा रहा है। सीएम पुष्कर सिंह धामी के प्रयासों से उत्तराखण्ड उत्तर प्रदेश और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम के बीच रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम ट्रेन के मौजूदा नेटवर्क को मेरठ से ऋषिकेश तक विस्तार देने पर सहमति बन गई है।

एसएसजे विवि का दीक्षांत समारोह

अल्मोड़ा। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह में राज्यपाल गुरमीत सिंह ने छात्र-छात्राओं से दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहने और लोकल टू ग्लोबल सोच विकसित करने की अपील की। राज्यपाल ने विभिन्न संकायों के 169 विद्यार्थियों को पदक और 27817 की डिग्रियां जारी की। 48 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि दी। कुलपति प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट के नेतृत्व में किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

सवारियों के लिये भिड़ते चालक

चम्पावत। जनपद में सवारियों को लेकर वाहन चालकों के झगड़े बढ़ते जा रहे हैं। सुलह-समझौते के बाद मामले सुलता लिये जाते हैं लेकिन टनकपुर, लोहाघाट से लेकर अन्य जगह बार-बार उपजने वाले इस प्रकार के झगड़े से माहौल खराब हो रहा है। लोहाघाट में डुंगराबोरा निवासी चालक के गले में जूतों की माला डालने के आरोपी पुलिस ने पड़के हैं। नामजद चौथे आरोपी ने न्यायालय में आत्मसमर्पण किया।

तबादलों के विरोध में आवाज उठाई

हल्द्वानी। प्रदेश के महाविद्यालयों में शिक्षकों के तबादलों के विरोध में कई जगह छात्र नेताओं ने आवाज उठाई है। इनका तर्क है कि प्रवेश व परीक्षा के दौरान एकसाथ कई प्राध्यापकों को हटाना परेशानी का कारण बन रहा है। हल्द्वानी एमबी कालेज से ही 60 का तबादला हो गया है। निदेशालय का कहना है नए प्राध्यापकों की तैनाती भी हुई है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मरते समय पूंछ......

प्रथम पृष्ठ का शेष

केड़ों में घिर कर जल जाने की कई घटनाएँ हो चुकी थीं। उसकी पत्नी हरुली ने उसके वापस न आने के कारण रोना धोना शुरू कर दिया। पूरे गाँव के लोग इकट्ठा होने लगे, सब को हयात की चिन्ता होने लगी। सब लोग कट्यूल की ओर जाने लगे। अन्धेरा घिरने लगा था। इसलिये राकें (मशाल) जलाई गई। पूरे कट्यूल के एक-एक पेड़ की राख छानी गयी। एक पेड़ के सामने बने केड़े की राख में कुछ जली हुई हड्डियाँ व खोपड़ी मिल गई। बस फिर क्या था। रोना धोना शुरू हो गया। गाँव के सभी लोग रोने बिलखने लगे। हरुली तो बेहोश हो गई। जब रोना धोना कुछ कम हुआ तो हरुली को भी कुछ होश आया। वह फिर जोर-जोर से रोने लगी। बड़े बूढ़े लोगों ने जो अब रोकर स्वयं शान्त हो गये थे, उसे तरह-तरह से समझाना शुरू कर दिया। जब हरुली का रोना धोना कुछ कम हुआ तो बड़े बूढ़ों ने तय किया कि हयात की अग्नि शान्त शुद्धि हो चुकी है, जली हुई हड्डियों का दुबारा दाह संस्कार अनावश्यक है। अतः यह तय किया गया कि राख व हड्डियाँ बीन कर पवित्र नदी में प्रवाहित कर दी जायें। अतः राख हड्डियाँ बीनी जाने लगीं। इस प्रक्रिया में एक आदमी को राख के ढेर के किनारे एक अधजली पूंछ मिली। वह भी बुरी तरह झुलसी हुई थी परन्तु देखने से इसके पूंछ होने में किसी को सन्देह नहीं था। अब यह शंका होने लगी कि यदि हयात जल कर मर गया था तो यह पूंछ कहाँ से से आई? किसी ने इसे जंगली जानवर की पूंछ होने की बात कही, पर अधजली खोपड़ी बता रही थी कि यह मानव की खोपड़ी है। फिर पूंछ किसी जानवर की हो सकती है, इसका अनुमान कोई भी नहीं लगा पाया। बड़े बूढ़ों ने दखल दिया। एक ने कहा कि आदमी की पूंछ नहीं होती है, पर देवी के प्रकोप से अचानक पूंछ जम सकती है। दुनियाँ में क्या असम्भव है? दूसरे कई लोगों ने भी उसकी बात का समर्थन किया। अतः सबकी यही राय हुई कि राख में पाई गई खोपड़ी, हड्डियाँ व पूंछ हयात की ही है। अतः पवित्र अवशेषों में पूंछ के अवशेष को भी नदी में प्रवाहित करने के लिये रख लिया गया। अधर, हयात की पत्नी अत्यधिक शोकाकुल थी। उसका दुख दुगणित हो गया था, एक तो पति की असामयिक मृत्यु और दूसरे, मरते समय पूंछ का उगना। वह बार-बार चिल्ला रही थी- 'स्वामी मरते समय तुम्हारी पूंछ क्यों जमी।'

(स्वामी, मरते समय तुम्हारी पूंछ क्यों जमी?)

अन्तिम अवशेषों को एक बोरी में भर कर ज्यों ही चलने की तैयारी होने लगी तो यह सोचा गया कि बोरे को शव की तरह लकड़ी के चौडोले में ले जाया जाए। इसके लिये लकड़ी के लट्ठों की जरूरत थी। कुछ लोग कुल्हाड़ी लेकर कुछ दूरी पर खड़े पेड़ की टहनी काटने के लिये पेड़ के पास पहुँचे तो पेड़ के नीचे उन्हें कोई आदमी लेटा हुआ दिखाई पड़ा। उसे गौर से देखने पर उसे पहचान लिया गया, वह हयात ही था, जो गहरी निद्रा में था। उसे जगाया तो वह चारों ओर अन्धेरा व सामने कई लोगों को देख कर घबरा गया। फिर वह संयत होकर बोला- 'अरे रात हो गई! आज जाने कहाँ से इतनी गहरी नींद आ गई।' उसके जिन्दा होने की खुशी में उसकी पत्नी एक बार फिर बेहोश हो गई और बड़ी देर बाद उसे होश आया।

राख में खोपड़ी, हड्डियाँ व पूंछ मिलने का रहस्य भी उसी ने खोला- 'उस पेड़ में एक बहुत बड़ा लंगूर बैठा था। ज्यों ही आग की लपटें उठीं, वह धुएँ से घिर गया और उसने विचलित होकर आग में छलांग लगा दी। उसे बचाने की कोशिश मैंने की पर उसे बचाने के लिये अपनी जान खतरे में पड़ गई थी। इसलिये मैं वहाँ से चला आया और इस पेड़ की छाया में आराम करने लगा, परन्तु मुझे गहरी नींद आ गई।

स्मृतियां शेष

सांस्कृतिक चेतना के लिये आजीवन सजग रहे रमेश चन्द्र शर्मा

डॉ. पंकज उप्रेती

पिथौरागढ़ के लिन्ठ्यूड़ा निवासी रमेश चन्द्र शर्मा का 15 जून 2026 को प्रातः 7.30 बजे निधन हो गया। वह पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे और स्वास्थ्य कारणों से हरिद्वार में थे। उनका जाना समाज के लिये अपूरणीय क्षति है।

सोर घाटी के सम्भ्रान्त परिवार में जन्मे शर्मा जी विलक्षण प्रतिभा के थे और उनमें ससाज के हर रंगढंग पहचान की गहरी समझ थी। साहित्य-संगीत में बचपन से ही अभिरुचि होने के कारण व इसकी बारिकियों को जानते थे। आंग्ला भाषा से अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद वह शिक्षाविभाग में हमेशा दूरस्थ सेवाएं देते रहे। उनकी सादगी और सच्चाई थी ही ऐसी कि वह अपने परिवार के लिये वह भाव रखते थे जो ग्रामीण समाज के लिये उनका था। उनकी सादगी और सच्चाई के कारण भगवान का आशीर्वाद भी उन्हें योग्य पुत्री-पुत्रों के रूप में मिला। वह अपने पीछे पत्नी श्रीमती भगवती देवी और विवाहित सुपुत्र भूपेश शर्मा, जयवर्द्धन शर्मा, सुत्री श्रीमती मीनाक्षी अवस्थी के परिवारों सहित ईष्ट मित्रों को ढेर सारी यादों के साथ छोड़ गये हैं। हमेशा संगीत और साहित्य की ठोस धारा यानी शास्त्रीय पद्धति से जुड़े रहे रमेश चन्द्र जी मन ही मन उन रागों को गुनगुनाते जिनकी छाया पर्वतीय धुनों में थी। साथ ही रागों के प्रयोग और तालों के गूढ़ रहस्यों पर खोए रहते। सद् साहित्य में उनकी रुचि और इतिहास की जानकारी थी। यही कारण था कि वह दुनियादारी के झमेले से हटकर उन साथियों को पसन्द करते थे जिनका लगवा इस ओर हो।

अपनी सरकारी सेवा के लिये थल क्षेत्र में वह लम्बे समय तक रहे और सैकड़ों शिष्यों को तैयार किया। साथ ही समाज को दिशा देने के साथ सांस्कृतिक मूल्यों को समझाने में समय लगाया। तल्ला जोहार के क्वीटी क्षेत्र में साहित्यिक गतिविधियों के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में उनकी अभिरुचि समाज को जागृत करती रही। उन्हें सरकारी सेवा में होने का कोई गुमान नहीं था बल्कि उनकी हमेशा कोशिश रही कि हम समाज को क्या दे सकते हैं। समाजन में होने वाले आयोजनों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, रामयण भागवत कथाओं में तक वह बराबर जाते रहे और आवश्यकता अनुसार संगीत मंच पर अपनी ओर से संगत करने लगते। बांसबगड़ क्षेत्र में भी उनकी यह जागृत अभियान चलता रहा। इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य होने के साथ ही वह एकदम आम जन बनकर लोगों के बीच रहते। नेपाल सीमा पर बगड़ीहाट क्षेत्र में भी दूर-दूर तक वह सांस्कृतिक अलग जगाते रहे। हिमालय संगीत शोध समिति हल्द्वानी से जुड़कर उन्होंने कई कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया और नियमित रूप से पिथौरागढ़ अपने आवास में भी महफिलों को सजाया ताकि शास्त्रीय विधा फलती फूलती रहे।

शिक्षक के अलावा संगीत साधक के रूप में शर्मा जी को मैंने देखा है। बेहद सहज व्यक्तित्व के शर्मा जी का विवाह भटीगांव, बेरीनाग के शिक्षित और सुशील पन्त परिवार की भगवती जी के साथ हुआ। इनकी साध और साधना के पीछे श्रीमती भगवती देवी का पूरा श्रम रहा है। इनकी ईमानदारी और समाज को दिये गये निस्वार्थ समर्पण का परिणाम है कि सुपुत्री डॉ.मीनाक्षी चिकित्सा क्षेत्र में हैं। जबकि ज्येष्ठ पुत्र भूपेश भाई पश्चिमबंगाल में वरिष्ठ अधिकारी के रूप में संस्थान से जुड़े हैं जबकि कनिष्ठ पुत्र जयबर्द्धन प्रशासनिक सेवा में प्रदेश के विभिन्न जनपदों में अपनी सेवा के बाद वर्तमान में हरिद्वार में तैनात हैं।

रमेश चन्द्र जी की संगीत अभिरुचि भले ही बचपन से रही हो लेकिन गुरु रूप में बुलांकी राम से उन्होंने सितार, गायन, तबला, बांसुरी की तालीम ली। इसके अलावा केन्द्रीय विद्यालय पिथौरागढ़ में अपने समय के योग्य संगीत गुरुजन श्री मलिक साहब और श्री कपूर साहब से यह बेहद प्रभावित थे। रा.स्ना. महाविद्यालय में तैनाती के समय इनके साथ मेरी काफी घनिष्ठता रही जो अन्तिम समय तक बनी रही। इनके कुटुम्ब में मेरा स्थान परिवार के सदस्य की तरह रहा है। उनकी यादें हमेशा बनी रहेंगी। पिघलता हिमालय परिवार स्व. शर्मा जी को श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

संगीत जगत का दिव्य सितारा 'रमेश चन्द्र शर्मा'

महेश चन्द्र बराल

संगीत का अर्थ ही संग का गीत है और किसके साथ यह भी जानना जरूरी है। संगीत हमेशा दिल को सुकून देता है। सुकून वही देता है जो इस संसार के बन्धनों से ऊपर उठकर सोचता है। हमारा भारतीय संगीत भी हमेशा से मानव को भक्ति की ओर और निराकार की ओर जाने को प्रेरित करत रहा है। चाहे सुफियाना कलाम हो, चाहे गुरुवाणी हो चाहे भक्ति की कबीर रचना हो, या ही जितने में जो अन्दरूनी संगीत की बात करें तो यह सब मानव कल्याण से जुड़े हैं और सबका एक ही उद्देश्य है इस आत्मा को शान्ति देना, मनुष्य को एक रूहानी सफर की सैर करना। यही भारतीय आध्यात्म और भारतीय संगीत का मर्म मुझे लगता है।

ऐसे ही भारतीय संगीत के मर्मज्ञ जो हमेशा संगीत की साधना में लगे रहने वाले, सामान्य से दिखने वाले संगीतकार और साधक श्री रमेश शर्मा जी की निधन के खबर से मन को बहुत धक्का लगा। क्योंकि हम मनुष्य भी हैं और अपने करीब के एक अच्छे इन्सान का जाने का दुख होना स्वाभाविक है। मैं उन पुण्य आत्मा को नमन करता हूँ। शर्मा जी की संगीत साधना गुप्त थी और हमेशा साधना में रहते थे। एक संगीतकार का साथ-साथ एक अच्छे इन्सान और नगर के सम्मानित जिम्मेदार नागरिक भी थे। अक्सर मेरे दुकान में उनका आना और पुराने लोगों की चर्चा करना मुझे भी अच्छा लगता था और मुझे पुराने गीतकारों को जानकारी भी उनसे मिली। हिमालय संगीत शोध समिति के डॉ. पंकज उप्रेती जी जब पिथौरागढ़ महाविद्यालय में संगीत विभाग प्रमुख थे तो तब कई पुराने कलाकारों को डॉ. उप्रेती जी ने नए सिरे से मंच प्रदान किया और उन सब पुराने कलाकारों को एक संगठन में पिरोया। लगातार इन पुराने वरिष्ठ कलाकार अपनी संगीत को नए लोग तक सुनाते। इतना ही नहीं नए और पुराने सब कलाकार एक साथ संगीत की महफिल भी सजाते और शर्मा जी हमेशा शान्त स्वभाव से कई पुराने गाने और शास्त्रीय संगीत के रचनाएं सुनाते।

एक बार शर्मा जी ने अपने घर में भी संगीत का कार्यक्रम रखा था। तब नए पुराने कई संगीत के पारखी यहाँ आए और अपनी अपनी प्रस्तुति दी। गर्मी का दिन था तो उसी हिसाब से व्यवस्था भी की थी कुछ ठण्डा पेय पदार्थ, समय-समय पर चाय कुछ बिस्किट नमकीन और बीच बीच में गरम-गरम पकौड़े। अभी अच्छा संगीत की महफिल सजी थी जो मुझे याद है। और पहाड़ का आलू के गुटके मस्त चटनी के साथ। आज इस समय कई चेहरे याद आ रहे हैं हीरा बल्लभ पाण्डे जी, कुण्डल सिंह जी वड्डा, जगत मतवाल जी, जगत मल्ल साहब, गणेश कापड़ी जी, भुवन जोशी जी चण्डाक सब पुराने लोग एक साथ बैठ कर संगीत का महफिल सजते थे। तब भारतीय संगीत को उसकी आत्मा आध्यात्म से मिल जाता ऐसा मुझे लगा। क्योंकि संगीत एक मनोरंजन मात्र नहीं, यह अध्यात्म के साधकों के लिय एक साधन भी है। इस संगीत के अनमोल सितारा का आज अस्त होना संगीत जगत के लिय बहुत बड़ा क्षती है। इसका भरपाई होना मुश्किल है, पर यही सत्य भी है कि जो आया उसको जाना है।

लोग आएंगे जाएंगे पर हम तुम को भूल ना पाएंगे। पुण्य आत्मा की शान्ति का कामना करता हूँ। शर्मा जी हमेशा संगीत के सितारे की तरह हमारे मन मस्तिष्क में चमकते रहेंगे।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE

Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani

(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

मानसून मौका कार्बेट टाइगर रिजर्व में ही

रामनगर। इस साल मानसून सीजन में पर्यटकों को केवल कॉर्बेट टाइगर रिजर्व (सीटीआर) जोन में ही सफारी का मौका मिलेगा। तराई के फाटो जोन को एक जुलाई से बन्द कर दिया जायेगा। पिछले मानसून में फाटो जोन को खोला गया था

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड को अशान्त करने की कोशिश न हो

कर्णप्रयाग, गोचर, धारचूला, हरिद्वार तमाम घटनाओं के पीछे कौन?

धीरज उप्रेती/ललित नैनवाल

उत्तराखण्ड में इस बार का पर्यटन सीजन व धार्मिक यात्राओं के दौर में इस देवभूमि को अशान्त करने की कई कोशिशें हुई। आंखिर घपलेबाजी कर इस पर्वतीय प्रदेश को कौन लोग अशान्त करना चाहते हैं? समाज में वैमनस्यता फैलाने वालों से सावधान रहने की जरूरत है। साथ ही सोशल मीडिया पर कभी भी हड़बड़ी करते हुए इस प्रकार की पोस्ट डालने से बचना जरूरी है।

पूरी पड़ताल के बाद यह तो साफ दिखाई दे रहा है कि ग्रीष्मकालीन मौके पर बाहर से तमाम लोग पहाड़ घूमने आना चाहते हैं। साथ ही धार्मिक आस्था से लदे लोगों का हुजूम भी होता है। ऐसे अवसर पर उन लोगों की भी कोई कमी नहीं है जो संस्कृति, समाज, भाईचारे से

सड़कें जाम होने से भी बहुत दुर्गति हुई है

कोई मतलब नहीं रखते बल्कि सिर्फ अपना मनोरंज चाहते हैं। नंग-धड़ंग पहनावे के साथ फर्राटेदार गाड़ियों में आने वाले ऐसे लोगों के कारण पहाड़ अशान्त होने लगे हैं। ऐसे ही लोगों के कारण पर्वतीय मार्गों पर जाम भी बढ़ता जा रहा है क्योंकि तेज स्पीड के अलावा पहाड़ी मार्गों पर गाड़ी फंसा देने व लाइन तोड़कर आगे बढ़ने की होड़ से अन्य सभी को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। सड़कें जाम होने से बहुत दुर्गति हुई है। पहाड़ की ठण्डी हवा में लहराने वाले सड़कों के किनारे जहाँ मन हो अपना वाहन लगाकर मनमर्जी करने लगते हैं जबकि जाम से स्थानीय लोग व दूर दराज के यात्री बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। इसके अलावा व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण भी उलझने वाले सक्रिय रहते हैं।

कर्णप्रयाग में सिख युवकों द्वारा तलवार लहराते हुए जिस प्रकार का किया गया उससे काफी अशान्ति हुई। गोचर में भी सड़क नियमों को तोड़कर आगे बढ़ रहे यात्रियों की तूतू-मैंमैं खूब हुई। धारचूला में ओम पर्वत, आदिकैलास यात्रा के समय टैक्सी चालकों की बहस देखी गई। हरिद्वार में गंगा तट पर अनुशासन तोड़ने वालों का झगड़ा भी खूब वायरल हुआ है। लगातार जाम और झगड़ेफसाद से बेचैन देवभूमि में पर्यटन के नाम पर अन्धाधुन्ध आती भीड़ के लिये सख्त नियमावली तय करनी होगी, ऐसी मांग उठ रही है।

‘पिघलता हिमालय’ स्थापना के 49वें वर्ष में प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

खुशाल सिंह मर्तोलिया

(प्रबन्धक पीडीएम/बीडीबीएस) एनआईसी
मण्डल कार्यालय, ‘जीवन प्रकाश’
उमाशंकर प्रसाद मार्ग, रमना
मुजफ्फरपुर

पर्वतीय शैली के स्वर्णाभूषण का विश्वसनीय प्रतिष्ठान

दिनेश वर्मा

जौलजीवी

उत्तम सिंह पांगती

रिटा.जज, जोहार नगर
हल्द्वानी

मै. मानक चन्द्र शम्भू दयाल

कोसी रोड, रामनगर (नैनीताल)
अनुज मित्तल

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379

APNA GHAR 6396098804

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)